ISSN: 2582-7162

लेख

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड़–19 के दौरान आनॅलाईन शिक्षा का अध्ययन आदतों पर प्रभाव का अध्ययन

रीटा बिस्ट[1], नीरू बाला[2]

[1]शोध निर्देशिका, प्राचार्य, दीपशिखा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर (राज.)

शोधार्थी, प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, वाटिका, जयपुर–303905

Corresponding Author: Shiv Kumar Sharma, Associate Professor, Mahatma Gandhi Nursing College, Jaipur.
E-mail: shivsharma@mgumst.org

प्रस्तावना

वर्तमान दौर में आधुनिक तकनीक व इण्टरनेट उपलब्धता ने शिक्षण व अध्ययन प्रणाली में आमूल–चूल परिवर्तन के साथ–साथ शिक्षक व अध्येता दोनों को प्रभावित किया है। तकनीकी माध्यमों के शिक्षण व्यवस्था में आगमन से शिक्षा से जुड़े समस्त पहलू प्रभावित हुए है। क्लास रूप में कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, पॉवर पॉइंट प्रजेंटेशन, ऑनलाइन पाठ्यक्रम जैसी तमाम नई पद्धतियों ने शिक्षा प्रदान करने व सीखने दोनों तरीकों को तकनीकमय बना दिया है। वर्तमान में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी से अध्ययन–अध्यापन के नये–नये तरीके सामने आए हैं। वैश्वीकरण के दौर में 'शिक्षा आपके द्वार' जैसी कल्पना आज साकार हो रही हैं। ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के माध्यमों से विश्व छात्र एवं वैश्विक कक्षा जैसी कल्पना भी सार्थक सिद्ध होती दिखाई दे रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक के इन प्रयोगों के चलते विभिन्न संस्कृतियों व पृष्ठभूमि के छात्रों को एक प्लेटफॉर्म पर अध्ययन का अवसर मिलता हैं। छात्रों तक पहुंच बढ़ाने के उद्धेश्य से बहु–संस्कृति अध्ययन की पद्धति विकसित हुई है।

मुख्य शब्द : माध्यमिक; स्तरातनविद्यार्थियों; कोविड़–19; आनॅलाईन शिक्षा; अध्ययन; आदतों; प्रभाव

SDES- International Journal of Interdisciplinary Research is a journal of Open access. In this journal, we allow all types of articles to be distributed freely and accessible under the terms of the creative common attribution- non-commercial share. This allows the authors, readers and all scholars and general community to understand, use and to develop non-commercially work, as long as appropriate credit is given and the newly developed work are licensed with similar terms.

How to cite this article: बिस्ट री, बाला नी. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की कोविड़–19 के दौरान ऑनलाईन शिक्षा का अध्ययन SDES_IJIR;2024;816-821

Submitted: 03 July-2024; **Accepted:** 08-July-2024; **Published:** 10-July-2024

भूमिका

मीडिया व मीडिया अध्ययन दोनों ही तकनीक को समकक्ष लेकर चलने वाले क्षेत्र हैं। मीडिया शिक्षक व छात्र दोनों ही वर्गों पर ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली का प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष प्रभाव सामने आया हैं। मीडिया शिक्षक आधुनिक समय में ऑनलाइन शिक्षण तकनीक से जितना सहज होंगे उतनी सहजता से ही मीडिया छात्रों को मीडिया विषयों से जुड़ी जानकारी देने में सफल रहते हैं। मीडिया शिक्षकों की ऑनलाइन पाठ्यक्रम, शिक्षण प्रणाली से जुड़ी जानकारी के विश्लेषण से मीडिया अध्ययन की स्थिति, शिक्षकों की तकनीक से सहजता व तकनीक ज्ञान के शिक्षण प्रणाली पर प्रभाव को सामने लाया जा सकता हैं।

ई–शिक्षा का अर्थ इण्टरनेट से मात्र सूचना आदान–प्रदान करने से कहीं ज्यादा हैं। ई–शिक्षा इलेक्ट्रॉनिक माध्यम का उपयोग व्यवसायिक शिक्षा को सुचारू रूप से प्रस्तुत करने की प्रक्रिया को अपने अन्दर समाहित करती है। ई–शिक्षा शब्द का प्रयोग एक ऐसी शैक्षिक ढांचेगत व्यवस्था के रूप में किया जाता हैं, जो लगभग सभी इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों, इण्टरनेट, इंट्रानेट, एक्सट्रानेट, कृत्रिम उपग्रह प्रसारण, ऑडियो एवं वीडियो, इंटरैक्टिव टेलीविजन, सी.डी., प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर इत्यादि द्वारा पेशेवर शिक्षा को विद्यार्थियों तक बड़े ही रोचक तरीके से पहुंचाता है। ई–शिक्षा शब्द के स्थान पर ऑनलाइन शिक्षा, कम्प्यूटर आधारित शिक्षा, सूचना जाल आधारित शिक्षा, सूचना जाल संसाधन आधारित शिक्षा, नेटवर्क सहयोगी शिक्षा, कम्प्यूटर समर्थित

सहयोगी शिक्षा, इत्यादि शब्दों का भी उपयोग किया जाता है। ई–शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी व शिक्षक सूचना तथा विचारों का आदान–प्रदान करते हुए एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। ई–शिक्षा का सफलपूर्वक उपयोग सूचना संचार तकनीक के विकास, इण्टरनेट उपलब्धता, कुशल शिक्षक, तकनीकी ज्ञान, तकनीकी उपकरणों तक प्रत्येक छात्र की पहुंच से ही संभव होगा। ई–शिक्षा आज आधुनिक आभासिक विश्वविद्यालय की संकल्पना को साकार कर रही हैं, जो प्रत्येक जरूरतमंद छात्र तक शिक्षा की पहुंच के उद्धेश्य को पूरा कर सकती हैं।

डेसकेसी, (1998) ने वेब आधारित शिक्षण के लिए चार लर्निंग मॉडलों का वर्णन किया। पहले मॉडल में सूचना स्रोत के रूप में वेब के प्रयोग का उल्लेख किया है। इस मॉडल में पारंपरिक पेपर व दस्तावेज आधारित पाठ्यक्रम सामग्री को वेब के रूप में पुनः उपलब्ध कराया जाता हैं। दूसरे मॉडल में वेब एक इलेक्ट्रॉनिक पुस्तक बन जाती हैं। इसमें पाठ्यक्रम सामग्री को अधिक संरचित एवं व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। गूगल पेज, हाइपरलिंक्स का उपयोग करना, मल्टीमीडिया, छोटे वीडियो–क्लिप एवं ऑनलाइन पद्धति से मूल्यांकन इत्यादि प्रयोगों को इसमें शामिल किया गया है। ई–शिक्षा के तीसरे मॉडल में वेब–ट्यूटर के रूप में शिक्षक व छात्र की तरह ई–मेल या चैट रूम के माध्यम से अधिक संवाद कर पाता है। आमने–सामने प्रत्यक्ष संवाद की स्थिति इस स्तर पर बन पाती है। अंतिम मॉडल में वेब वास्तव में ट्यूटर एवं छात्र के बीच संचार का माध्यम बन जाता है। वेब और छात्र घर पर पाठ्यक्रम सामग्री प्रकाशित करने के बजाय इससे सीखते हैं, शिक्षक छात्र के साथ प्रत्यक्ष बातचीत में शामिल होता हैं। इस मॉडल में छात्र वेब से नहीं बल्कि वेब के माध्यम से सीखता हैं। शैक्षिक रेडियों व टेलीविजन प्रसारण से शिक्षण की मूलभूत शिक्षा गुणवत्ता के साथ–साथ संचार की प्रक्रिया पर भी प्रभाव पड़ा है। तकनीक के चलते संवाद का स्वरूप अधिक विवरणात्मक हुआ है। ई–लर्निंग या ऑनलाइन शिक्षण में संवाद की दिशा एकतरफा या केवल छात्र एवं वेब पेज के बीच है। एक तरफा संवाद विकसित होने के चलते संवाद प्रक्रिया भी प्रभावित हुई है। एकतरफा संवाद होने के कारण प्रतिपुष्टि का चरण इस संपूर्ण संचार प्रक्रिया से गायब हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक के इन प्रयोगों के चलते विभिन्न संस्कृतियों व पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ सीखने का मौका मिला है। छात्रों तक पहुंच बढ़ाने के उद्धेश्य से बहु–संस्कृति अध्ययन की पद्धति विकसित हुई है। ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव स्कूली शिक्षा के बाद ड्रॉपआउट बच्चों की संख्या में कमी के रूप में सामने आया है। दूरस्थ उच्च शिक्षा में निश्चित रूप से छात्रों की संख्या बढ़ोतरी हुई हैं।

मानव प्रकृति की सर्वोत्तम रचना है, जो अपने साथ कुछ जन्मजात शक्तियाँ लेकर पैदाहोता है। शिक्षा के द्वारा मानव की इन जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है।

भारतीय दृष्टिकोण में शिक्षा संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु में अ प्रत्यय लगने से बना है। शिक्ष का अर्थ है सीखना और सिखाना। इसलिए शिक्षा का अर्थ हुआ – सिखने–सिखाने की प्रक्रिया। यह सीखने सिखाने की प्रक्रिया मानव के जन्म से ही उसके परिवार द्वारा अनौपचारिक रूप से तत्पश्चात् विद्यालय भेजकर औपचारिक रूप से प्रारम्भ कर दिया जाता है। इस प्रकार विद्यालय में प्राप्त की गयी शिक्षा हमें अनुशासन के साथ रहना सिखाती है। सदाचार, सद्भावना, सम्मान तथा सहयोग का गुण हम शिक्षा से ही सीखते हैं मानव जीवन में शिक्षा न केवल जिन्दगी की चुनौतियों के लिए तैयार करती है, बल्कि उन चुनौतियों से हार न मानने का नजरिया भी देती है।

पृथ्वी पर जीवन और उसके अस्तित्व का संतुलन बनाने के लिए दुनिया भर के लोगों के लिए शिक्षा बहुत महत्वपूर्ण उपकरण है जो सभी को आगे बढ़ने और जीवन में सफल होने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षा हमें हमारे शरीर, मन, और आत्मा का ठीक संतुलन बनाने में सक्षम बनाती है। यह हमारे पूरे जीवन को प्रशिक्षित करती है और हमें वो दृष्टि देती है, जिससे बड़े से बड़ा लक्ष्य हम खुद चुनते हैं और अपनी शिक्षा का उपयोग कर ही हम उस लक्ष्य को पाते हैं। शिक्षा का महत्व तो सिर्फ वहीं बता सकता है जिसने अशिक्षित होने का नुकसान उठाया है। शिक्षा न केवल एक व्यक्ति के लिए बल्कि एक परिवार, एक समुदाय तथा एक राष्ट्र के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि ''किसी भी राष्ट्र के विकास की गति उसके नागरिकों के बीच शिक्षा के प्रसार से ही होती है।''

आधुनिक युग में शिक्षा का महत्व उतना ही महत्वपूर्ण है जितना एक पौधे को फलदार पेड़ बनाने के लिए मिट्टी और पानी का महत्व होता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार द्वारा भी शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार का दर्जा दे दिया गया। इस प्रकार पठन–पाठन का कार्य उत्तम गति से चल रहा था कि एक ऐसा दौर आया कि एक वायरस ने सम्पूर्ण शिक्षा जगत् को हिला कर रख दिया कोरोना जैसी वैश्विक महामारी ने स्कूलों में ताले लगवा दिये और किताबें बस्तों में बंद हो गई। मानव इतिहास में पहली बार वैश्विक स्तर पर बच्चों की एक पूरी पीढ़ी की शिक्षा बाधित हुई।

कोरोना का देश की शिक्षा पर बड़ा असर पड़ा। संयुक्त राष्ट्र शैक्षणिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक संगठन (यूनेस्को) ने एक रिपोर्ट

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/5.3.2024:816-821

जारी की जिसके अनुसार कोरोना महामारी से भारत में लगभग 32 करोड़ छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई जिसमें 15.81 करोड़ लड़कियां और 16.25 करोड़ लड़के शामिल है वैश्विक स्तर पर इस महामारी से दुनिया के 193 देशों के 157 करोड़ छात्रों की शिक्षा प्रभावित हुई। ऐसे में बच्चों का सीखना लगातार बना रहे इसके लिए ऑनलाइन शिक्षा का प्रारम्भ एक विकल्प के रूप में किया गया। ऑनलाइन शिक्षण कोरोना संकट के निराशा भरे माहौल में एक आशा की किरण लेकर आया और बच्चे लैपटॉप, सेलफोन, टेब आदि के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने लगे। ऑनलाइन शिक्षा को सरल भाषा में इंटरनेट आधारित शिक्षा व्यवस्था कहते है। इसमें इंटरनेट उपकरणों का उपयोग करके विद्यार्थी और शिक्षक संवाद स्थापित करते हैं। इस प्रकार इस वैश्विक महामारी में ऑनलाइन शिक्षा शिक्षण का माध्यम तो अच्छा है परन्तु इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलू सामने आये है। अगर सकारात्मक पहलू की बात करें तो कोरोना जैसी महामारी में शिक्षा से बिल्कुल दूर रहने से तो अच्छा है ऑनलाइन से कुछ तो बच्चे सीख रहे है। ऑनलाइन शिक्षा के जरिए कई छात्र एवं अभिभावक डिजिटल हुए है जिससे उनको टेक्नोलॉजी की समझ हुई है। ऑनलाइन शिक्षा आप कभी भी कहीं भी ले सकते है।

कम लागत में शिक्षा प्राप्त कर सकते है। इसमें समय की बचत होती है। साथ ही यह एक सुरक्षित विकल्प भी है। लेकिन इसके नकारात्मक पहलू भी बहुत है। भारत देश वैसे तो प्रतिभा प्रधान देश है परन्तु संसाधनों की जहां बात आती है वहां अन्य देशों से बहुत पीछे है।

बहुत से क्षेत्रों में देश तरक्की कर चुका है परन्तु शिक्षा एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें हमारा देश आज भी बहुत पीछे है। शिक्षा को लेकर संघर्ष की कहानी वही है बस फर्क इतना है कि पहले के लोग स्कूल जाने के लिए संघर्ष करते थे और आज की पीढ़ी को ऑनलाईन शिक्षा हासिल करने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। ऑनलाइन कक्षा के लिए इंटरनेट चाहिए और भारत में सभी लोगों की इन्टरनेट तक पहुंच ही नहीं है। बहुत सारे बच्चे ऐसे हैं जिनके पास स्मार्टफोन, लेपटॉप नहीं है, बहुत सारे बच्चे ऐसे है जो बार–बार बिजली जाने से पढ़ाई नहीं कर पाते, बहुत सारे बच्चे ऐसे है जो ऑनलाइन कक्षा में ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते क्योंकि जिस तरह वास्तविक कक्षा में जो उत्साह का वातावरण होता है। यहां उस वातावरण का अभाव होता है। एक जीवंत कक्षा या लाइव कक्षा में जो आनन्द का माहौल होता है ऑनलाइन अध्ययन में उस माहौल की कमी होती है। विद्यालय में प्राप्त की गई शिक्षा बच्चों को अनुशासन के साथ रहना सिखाती है। सदाचार, सद्भावना, सम्मान, सहयोग का गुण विद्यालय में सीखने को मिलता है।

शिक्षा हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। हमारी मनोवृति का निर्माण हमारे जीवन, हमारे आचरण के अनुरूप होता है। हमारे जीवन तथा आचरण का मूल आधार है हमारी शिक्षा का महान उद्धेश्य ज्ञान नहीं बल्कि क्रिया है। शिक्षा प्राचीन काल से एक रूचिकर विषय रही हैं क्योंकि मनुष्य का जन्म एवं जैविक प्राणी स्वरूप जिज्ञासु प्रवृति के प्राणी के समान रहा है। उसके लिए शिक्षा के सामने सभी प्रकार के ज्ञान को ग्रहण करना और मनुष्य के चहुँमुखी विकास को माना है। मुख्य रूप से शिक्षा के उद्धेश्य समाज तथा व्यक्तियों के व्यक्तित्व का विकास करना है। शिक्षा समाज में अज्ञानता को दूर करती है और विभिन्न संस्कृतियों तथा रूचियों की समझ को जनमानस में विकसित कर उनमें व्याप्त भ्रम को दूर करती है।

वर्तमान समय में विश्व भर में एक विनाशकारी महामारी कोरोना व्याप्त है। जिससे पूरा जन जीवन प्रभावित हुआ है। जीवन का अभिनन अंग कहे जाने वाली शिक्षा पर भी इसका बहुत प्रभाव पड़ा है। सर फ्रांसिस वेमन कहते हैं ज्ञान ही शक्ति है। इन विषम परिस्थितियों में कोरोना गाईडलाइन के अनुसार स्कूल, कॉलेज और गैर सरकारी सभी शिक्षण संस्थाए बंद होने के कारण बच्चों के शैक्षणिक स्तर पर बहुत प्रभाव पड़ रहा है। जिससे देश की भावी पीढ़ी का भविष्य अंधकारमय होता हुआ दिखाई दे रहा है।

ऐसे समय में छात्रों की पढाई से सम्बन्धित ऑनलाईन शिक्षा एक वरदान के रूप में उभर कर आई है। प्रत्येक व्यक्ति को कोरोना वायरस के कारण दुनिया में उत्पन्न संकेतों के विषय में जानकारी है। इसी के चलते शिक्षा प्रणाली, औद्योगिक प्रणाली एवं समस्त कार्य प्रणाली पर इसका प्रभाव पड़ा है। ऑनलाईन शिक्षा के माध्यम से छात्रों को अपनी पढ़ाई में सहायता मिली है। कोरोना काल में ऑनलाईन शिक्षा व्यवस्था के महत्व को कुशलता से समझाा जा सकता है। ऑनलाईन शिक्षा अपनी एकाधिक विशेषताओं के साथ एक ओर उपयोगी है परन्तु इसका विचार रहित उपयोग अनेक सामाजिक मानसिक एवं शारीरिक समस्याओं का मार्ग प्रशस्त करने में असमर्थ है। जिसे किसी भी रूप में अनदेखा नहीं किया जा सकता है। आनॅलाईन शिक्षा व्यवस्था में अनेक नुकसान होते हुए भी इसकी कमी को सुधारने का प्रयास किया जा रहा है। इस शिक्षा व्यवस्था को हर छात्र तक पहुँचाने का लक्ष्य तैयार किया जा रहा है। 13 अप्रेल 2020 को राज्य सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा छात्र छात्राओं के अकादमिक वर्ष की महामारी के चलते होने वाली क्षति को रोकने के ''वर्चुअल क्लासेज'' को प्रारम्भ किया गया। इन कार्यक्रम को ''प्रोजेन्ट स्माईल'' नाम दिया गया। स्माईल के अन्तर्गत वाट्सऐप ग्रुप निर्मित करते हुए इनमें शिक्षकों, विद्यार्थियों तथा अभिभावकों को जोड़ा गया। इसके अर्न्तगत प्रतिदिन 9:00 बजे शैक्षणिक सामग्री को अपलोड किया जाकर, शिक्षकों से

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/5.3.2024:816-821

विद्यार्थियों तक अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने के साथ उनके सक्रिय मार्ग दर्शन की अपेक्षा की गई। शिक्षकों सहित विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के लिए इस शैक्षिक तकनीकी का प्रथम अनुभव था।

आज की वर्तमान स्थिति में बच्चे स्कूल व कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहें है लेकिन ऑनलाईन शिक्षा ने रास्ता काभी आसान कर दिया है। बच्चे निश्चित होकर घर पर अपनी पढ़ाई पूरी कर पा रहें है।

अवधारणात्मक परिभषाएँ

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु उपयोग की जाने वाली मुख्य अवधारणाएँ निम्नानुसार परिभाषित की जाती है।

(अ) आनलाईन अधिगम : ऑनलाईन अधिगम शिक्षा प्राप्त करने का एक ऐसा माध्यम है। जिसमें छात्र इंटरनेट के द्वारा धर पर बैठकर अपने कम्प्यूटर, लैपटॉप, टेबलेट या स्मार्टफोन से पढ़ाई करते है। इस शिक्षा प्रणाली के माध्यम से हम दुनिया के किसी भी कोने में रहकर अपने शिक्षक से जुड सकते है।

(ब) माध्यमिक कक्षाएँ : राजस्थान राज्य में संचालित विद्यालयों में कक्षा 9 एवं 10 के विद्यार्थी।

(स) ऑनलाईन शिक्षा के मानसिक प्रभाव :विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति में ऑनलाईन शिक्षा के कारण होने वाले परिवर्तन जिन्हे सामान्यतः मानसिक स्थिरता, स्क्रीन, थकान, अनिद्रा, अलगाव प्रवृति, चिन्ता, निराशा आदि के रूप में परिभाषित किया है।

(द) ऑनलाईन शिक्षा के सामाजिक प्रभाव :कोविड–19 ने बच्चों को घरों में कैद रहने को मजबूर कर दिया है। लम्बे समय तक स्कूल बंद रहना बच्चों के मनोसामाजिक स्वास्थ्य एवं विकास के लिए महत्वपूर्ण बाहरी गतिविधियों व सामाजिक सम्पर्क की कमी और वायरस को लेकर व्याप्त अनिश्चितता और भय ने बच्चों को सबसे अधिक प्रभावित किया है।

(य) ऑनलाईन शिक्षा के शारीरिक प्रभाव : ऑनलाईन अधिगम के कारण विद्यार्थियों में शारीरिक परिवर्तन तथा दृष्टि पर प्रभाव, श्रवण शक्ति,भार का बढ़ना या कम होना, शारीरिक थकावट इसी श्रेणी के अन्तर्गत आते हैं।

(र) कोविड–19 :कोरोना वायरस एक संक्रामक बीमारी है जो आमतौर पर वृद्ध या बच्चों में जल्दी से फैल जाती है यह वायरस खांसने, छींकने या मुंह के बहुत नजदीक आकर सांस लेने से फैलता है।आम तौर पर इसके लक्षण 2 से 14 दिन मे दिखाई देने लग जाते हैं। इस वायरस से बचाव के लिए हाथों का साबुन या सैनिटाइजर से धोना, लोगों से दूरी बनाए रखना व मुँह पर मास्क पहनना इत्यादि इस वायरस से बचाव में सहायक हैं।

कोरोना वायरस से पीड़ित लोगो के लक्षण कुछ इस तरह के होते है जैसे बुखार, थकान, सुखी खासी, नाक का बंद होना, बहति नाक, गले कि खराश, सांस लेने में कठिनाई आदि।

कोरोना वायरस से बचाव के उपाय

- अपने हाथों को कुछ समय के अंतर से नियमित साफ करें। साबुन और पानी का उपयोग करें, या अल्कोहॉल आधारित सैनीटाइजर से हाथ रगड़ें।
- खांसने या छींकने पर अपनी नाक और मुंह को अपनी मुड़ी हुई कोहनी या एक टिश्यू से ढक लें।
- दूर रहे अपनी आँखें, नाक या मुंह को न छुएं।
- यदि आप अस्वस्थ महसूस करते हैं तो घर पर रहें। अपने बर्तन किसी से शेयर ना करे।
- अगर आप बीमार है, तो पब्लिक जगहों से दूर रहे जैसे कि स्कूल, ऑफिस आदि। अपने स्थानीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के निर्देशों का पालन करें।

शिक्षा हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है और इसके बारे में आप उनसे ही जान सकते है जिसने किसी कारणवश शिक्षा ग्रहण नहीं करी या शिक्षा ग्रहण करने से वंचित रह गये है। परंतु आज के आधुनिक युग मे शिक्षा ने एक नया आयाम ही प्राप्त कर लिया है। आज शिक्षा प्राप्त करने का इतना आसान तरीका है कि आपको शिक्षा लेने के लिए कहीं बहार जाने की जरूरत नहीं पड़ती। शिक्षा लेने के लिए बस घर बैठे ही आप शिक्षक से शिक्षा ग्रहण कर सकते है। और इस शिक्षा का नाम ऑनलाइन शिक्षा है। आजकल के समय मे इंटरनेट जैसी सुविधा सभी घरों में उपलब्ध रहती है। कोरोनाकाल के समय मे ऑनलाइन शिक्षा बहुत ही कारगार सिद्ध हो रही है। आजकल हर जगह चाहे गांव हो या शहर ऑनलाइन शिक्षा बहुत प्रचलित हो रही है। देश हो या विदेश ऑनलाइन शिक्षा से आप कहीं भी जुड़ सकते हो। आज विद्यार्थियों के लिए बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हो रही हैं ऑनलाइन शिक्षा।

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/5.3.2024:816-821

ऑनलाइन शिक्षा क्या है और किसे कहते है ?

बहुत से व्यक्तियों को तो यही नहीं पता रहता है कि ऑनलाइन शिक्षा कहते किसे है। क्योंकि उसका ताल्लुक इन सब चीजों से पड़ता ही नहीं, वो तो इनसब बातो से अनजान ही रहता है। ऑनलाइन शिक्षा का तात्पर्य स्कूल, विद्यालय या महाविद्यालय में जाकर जो नियमित रूप से शिक्षा ग्रहण की जाती है उसके विपरीत है। सरल भाषा में हम ऑनलाइन शिक्षा को उस प्रणाली के रूप में समझ सकते हैं, जिसके द्वारा विद्यार्थी अपने ही घर में बैठकर इंटरनेट और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण यथा कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन और टेबलेट के द्वारा शिक्षा प्राप्त कर सके. इस नई शिक्षा प्रणाली ने दूरी और समय के बंधन को बिलकुल दूर कर दिया हैं।

ऑनलाइन शिक्षा मोबाइल, लेपटॉप, कम्प्यूटर आदि के माध्यम से घर मे ही अपने पाठ्यसामग्री का अध्यापन करना कहलाता है। इसमें ऑनलाइन ही पुस्तको, नोट्स आदि का इस्तेमाल करके शिक्षक द्वारा समझाया जाता है या फिर व्याख्यान किया जाता है।

ऑनलाइन शिक्षा में वीडियो कान्फ्रेंसिंग आदि टेक्नोलॉजी इस्तेमाल होती है और इसे ही ऑनलाइन शिक्षा कहा जाता है। ऑनलाइन शिक्षा में इंटरनेट सुविधा का महत्वपूर्ण योगदान जरूरी है, क्योकि इसके बिना ऑनलाइन शिक्षा नहीं दी जा सकती।

ऑनलाइन शिक्षा का प्रभाव

महामारी ने दुनिया भर में शिक्षा और शैक्षिक प्रणालियों को अत्यधिक प्रभावित किया है। कोरोना के प्रभाव को कम करने की कोशिशो में दुनिया भर की शिक्षण संस्थानों को अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया। 1.077 बिलियन शिक्षार्थी स्कूल बंद होने के कारण प्रभावित हुए है। अब सबसे बड़ा सवाल उठता है कि विद्यार्थी शिक्षा कैसे ग्रहण करें। इसके लिए कई बड़ी संस्थओं ने इसका एक ही हल निकाला वो है ऑनलाइन शिक्षा। जिसका असर हर जगह देखा जा सकता है।

ऑनलाइन शिक्षा एक प्रकार से कम्प्यूटर के माध्यम से इंटरनेट की सुविधा से प्राप्त की जा रही है। ऑनलाइन शिक्षा के लिए कम्प्यूटर ओर कई तरह के गैजेट्स का सहारा लिया जाता है। पर इसके लिए इंटरनेट की क्वालिटी अच्छी होनी चाहिए, इस बात पर हमे ध्यान देना होंगा।

एप या साफ्टवेयर का लाभ, डाटा की स्पीड पर निर्भर होता है। तभी तो इंटरनेट की सुविधा काफी जरुरी है। परंतु जब लोकडाउन जैसी परिस्थिति थी, तब इंटरनेट जैसी सुविधा में बहुत दुविधा उत्पन्न हो रही थी और इस वजह से नेट बहुत धीमी गति से चल रहा था। तो जाहिर ही हैं की इस वजह से कनैक्टिविटी भी धीमी होगी और शिक्षा पर असर पड़ेगा।

खैर लॉकडाउन जैसी तो अभी कोई परिस्थिति नहीं है, पर कोरोना जैसी घातक बीमारी ने अभी भी पीछा नहीं छोड़ा है। इसी के कारण ही स्कूल, विद्यालय ओर महाविधालय ने अभी भी स्थिति के नार्मल ना होने की वजह से ऑनलाइन शिक्षा को ही अपना बेहतर सहारा बनाया है। जो कि सही है या नहीं ये तो प्रत्येक रूप से परिस्थिति के प्रभाव पर ही निर्भर करता है।

ऑनलाइन शिक्षा के लाभ

दुनिया में कोरोना महामारी के फैलाव से कई चीजों में बदलाव बड़ी तेजी से हुए हैं। जिसमें से कुछ पर इसका प्रभाव अच्छा था और कुछ पर बुरा था। कोविड–19 की वजह से न सिर्फ कारोबार बल्कि उसके साथ पाठशाला और अन्य सब चीजों पर पाबंदिया आयी। शिक्षा तो जीवन का मूल आधार हैं। आज के मानव के जीवन मे आए सभी सुधार केवल और केवल शिक्षा के वजह से ही आए हैं। हर एक नागरिक को उसके गुणवत्ता के अनुसार सही और उपयुक्त शिक्षा मिलना हर एक नागरिक का मूलभूत अधिकार है। कोरोना काल में अव्यस्थित हुई शिक्षा की घड़ी को सही राह पर लाने में ऑनलाइन शिक्षा का सबसे बड़ा योगदान हैं और इसके साथ ही ऑनलाइन शिक्षा का महत्व भी अचानक से तेजी से बढ़ा। बच्चों को घर से बाहर निकलकर पढ़ाई करना यह विकल्प न होने की वजह से इंटरनेट का इस्तमाल कर घर से मोबाईल या संगणक पर पढ़ाई करना यही सही रहा। इससे सभी बच्चोंका साल बर्बाद भी नहीं हुआ और घर पर खाली न बैठते हुए सबने कुछ न कुछ तो जरूर सीखा। कोविड–19 के महामारी के दौर में ऑनलाइन शिक्षा सभी बच्चों के लिए वरदान साबित हुई हैं।

क्या हैं ऑनलाइन शिक्षा ?

जैसे कि हम पारंपरिक रूप से गुरुकुल या फिर कक्षा में जाकर अपने गुरु के सामने बैठकर उनसे ज्ञान प्राप्ति करते थे। लेकिन शिक्षा का नवीनतम स्वरूप माने जानेवाले ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली में हम अपने गुरु से इंटरनेट की मदद से अपने घर मे बैठकर लैपटॉप या मोबाईल के जरिए मिलते हैं और उनसे ज्ञान की प्राप्ति करते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा एक ऐसा शिक्षा का माध्यम हैं जिसमे हम घर बैठकर विश्व के किसी भी विद्यालय से जुड़कर उसने पढ़ सकते

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/5.3.2024:816-821

हैं। इसका बहुत फायदा उन लोगों को मिल रहा हैं जो विदेश में जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं लेकिन कुछ निजी या अन्य कारणों की वजह से जा नहीं सकते। न सिर्फ यही बल्कि कई विद्यार्थी ऐसे हैं जो अपने कॉलेज के साथ कई अन्य चीजे पढ़ने या फिर किसी प्रतियोगिता की तैयारी करना चाहते हैं लेकिन कॉलेज छोड़कर जा नहीं सकते, इन बच्चों के लिए तो ऑनलाइन शिक्षा एक वरदान से कम नहीं हैं।

ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षा के कई नये विकल्प विद्यार्थियों के सामने खुले कर दिए हैं। जो न सिर्फ उनको बल्कि देश को भी आगे बढ़ने में मदतगार साबित होंगे। आज ऑनलाइन शिक्षा का महत्व ध्यान में रखते हुए कई संस्थाने आज बड़ी बड़ी सेवाओं जैसे सिविल सर्विस, इंजीनियरिंग और मेडिकल, कानून आदि की शिक्षा भी ऑनलाइन करने की तैयारी में लगे हुए हैं। इससे न सिर्फ विद्यार्थी बल्कि उनके पालक और संस्थानों को भी बहुत फायदा मिल रहा हैं। किसी भी संस्था या कोचिंग सेंटर्स मे व्यक्तिगत रूप से पढ़ने की बजाय ऑनलाइन पढ़ने से शिक्षा का खर्च, समय बचत हैं और उसकी गुनवत्ता भी अधिक मिलती हैं।

ऑनलाइन शिक्षा के लाभ

हर चीज के दो पहलू होतें ही हैं, उसी तरह ऑनलाइन शिक्षा के भी कुछ लाभ और हानि हैं। किसी भी नए चीज को अपनाने की लिए उसके लाभ और हानी जानना भी जरूरी होता हैं। पहले हिस्से में हम ऑनलाइन शिक्षा के फायदोंको जानते हैं, ऑनलाइन शिक्षा का पहला और सबसे बड़ा लाभ यह हैं की हम घर बैठे दुनिया के किसी भी विद्यालय से जुड़कर शिक्षा अर्जित कर सकतें हैं। इससे हमारा काफी समय भी बचत हैं जो पाठशाला और विद्यालय में जाने में लगता हैं। हम क्लास को रेकॉर्ड कर जब चाहे देख सकते हैं इससे बच्चों को उनके हिसाब से पढ़ने की सहूलियत मिलती हैं। पारंपरिक तरीके में पढ़ाई मे लगने वाले खर्च से ऑनलाइन शिक्षा में काफी काम खर्चा आता हैं।

ऑनलाइन शिक्षा में उपयोग होने वाले एनिमेशन, विडिओ, चित्र आदि चीजों की वजह से मुश्किल पढ़ाई भी आसान होती हैं। ऑनलाइन शिक्षा में हम अपने नियमित शिक्षा के अलावा हम कुकिंग, सिलाई, कढ़ाई, क्राफ्ट, ड्राइंग, पेंटिंग का प्रशिक्षण भी घर बैठे प्राप्त किया जा सकता हैं। जैसा कि हम में से कई लोग जानते है कि ई–लर्निंग दूरस्थ शिक्षा का एक रूप है। जहां शिक्षक दूर बैठे, चाहे वो जगह घर मे हो या घर के बहार कहीं से भी अपने विद्यार्थी को शिक्षा प्रदान कर सकता है।

इसके द्वारा शिक्षक ओर विद्यार्थी अपने विचारों को आदान प्रदान कर रहे है, जो कि शिक्षा को समझने का अच्छा जरिया है। ऑनलाइन शिक्षा के कई लाभ भी है, जो इस प्रकार है।

टेक्नोलॉजी से शिक्षा में बदलाव

बदलते परिवेश में टेक्नोलॉजी में भी कई बदलाब हुए है और इसके उपयोग भी बड़े है। टेक्नोलॉजी के वजह से शिक्षा लेने की पद्दति में भी बहुत से परिवर्तन देखने को मिले है। आज ऑनलाइन शिक्षा में उपयोग होने वाली शिक्षण सम्बंधित सामग्री, टेक्नोलॉजी से ऑनलाइन ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जा सकती है।

चाहे आप दुनिया के किसी भी कोने में ही क्यों ना हो, आप शिक्षण सामग्री को बस कुछ ही समय में दूसरे स्थान पर पंहुचा सकते है। जैसे कोई लिंक, शिक्षा समबन्धित कोई वीडियो, कोई फाइल। ये सभी प्रकार ऑनलाइन शिक्षा को ओर भी रचनात्मक बनाते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल, संध्याय ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी, 2005
2. भार्गव महेशय "मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन", हरप्रसाद भार्गव बुक हाउस, शैक्षिक प्रकाशन, आगरा, 1997,
3. भटनागर ए.बी., भटनागर मीनाक्षीय "भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास", आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, 2006
4. भटनागर सुरेशय ''शिक्षा मनोविज्ञान'', आर.लाल बुक डिपो, मेरठ 2008
5. भटनागर सुरेशय ''अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार'', इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, 2005
6. बेस्ट जॉन डब्ल्यूय '"रिसर्च इन एजूकेशन", प्रेक्टिस हॉल, (इंक) ऐंगिल बुक क्लिफस, यू.एस.ए., 1958
7. बोर्ग डेलनपेनय "अण्डर स्टेडिंग एजुकेशन रिसर्च", मेक्ग्राहिल बुक कम्पनी, न्यूयार्क, 1958